BANC 106: मानव पारिस्थितिकी: जैविक और सांस्कृतिक आयाम

(अनुशिक्षक चिंहित सत्रीय–कार्य)

(TMA)

कोर्स कोड: बीएएनसी 106

असाइनमेंट कोड: BANC 106/ASST/TMA/ जुलाई 2026–जनवरी 2027

कुल अंक: 100

निर्देशों को ध्यान से पढ़ें और तदनुसार उत्तर दें। सत्रीय कार्य में तीन अनुभाग हैं। आपको सभी अनुभागों से सभी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित में प्रत्येक के बारे में 500 शब्दों में उत्तर दें। **20X2 = 40**

(क) मानव पारिस्थितिकी की अवधारणा को परिभाषित कीजिए तथा मानवविज्ञान के साथ इसके संबंध का परीक्षण कीजिए।

(ख) पारिस्थितिकी और रोगों के मध्य संबंध की संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित में प्रत्येक के बारे में 250 शब्दों में उत्तर दें **10X 2= 20**

(क) गर्म एवं शीत वातावरण के प्रति मानव अनुकूलन (भ्नउंद ।कंचजंजपवद) की विवेचना कीजिए।

(ख) जन्म दर तथा मृत्यु दर का वर्णन कीजिए।

निम्नलिखित प्रश्नों में प्रत्येक के उत्तर 125 शब्दों में दीजिए। **2X5= 10**

(क) प्रदूषक

(ख) सांस्कृतिक भौतिकवाद

(ग) कृषक वर्ग

(घ) मानव पारिस्थितिकी एवं जलवायु परिवर्तन

(ङ) ऐलन का नियम

सत्रीय कार्य – III

(क) मानवविज्ञान के किसी भी अपनी पसंद के विषय पर एक नमूना शोध–प्रस्ताव लिखिए। **10**

(ख) आँकड़ों के विश्लेषण, व्याख्या तथा शोध–प्रतिवेदन लेखन की क्रमबद्ध प्रक्रिया का वर्णन कीजिए। **20**

(क) मानव पारिस्थितिकी की अवधारणा को परिभाषित कीजिए तथा मानवविज्ञान के साथ इसके संबंध का परीक्षण कीजिए।

उत्तर

प्रस्तावना

मनुष्य प्रकृति से अलग रहकर अपना जीवन नहीं चला सकता। भोजन, जल, वायु, भूमि, वनस्पति, पशु और ऊर्जा जैसे संसाधनों पर उसका जीवन निर्भर है। दूसरी ओर मनुष्य खेती, उद्योग, परिवहन, तकनीक तथा सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से पर्यावरण को लगातार बदलता भी है। मानव पारिस्थितिकी इसी दोतरफा संबंध का अध्ययन करती है। यह समझने का प्रयास करती है कि प्राकृतिक परिस्थितियाँ मानव शरीर, आजीविका, जनसंख्या, संस्कृति और व्यवहार को कैसे प्रभावित करती हैं तथा मनुष्य अपनी आवश्यकताओं और सामाजिक व्यवस्थाओं के अनुसार पर्यावरण में क्या परिवर्तन करता है।

मानव पारिस्थितिकी की अवधारणा

पारिस्थितिकी जीवों और उनके पर्यावरण के बीच पारस्परिक संबंधों का विज्ञान है। मानव पारिस्थितिकी में अध्ययन का केंद्र मनुष्य होता है, किंतु वह केवल जैविक जीव नहीं है। उसके पास भाषा, ज्ञान, सहयोग, तकनीक, विश्वास, अर्थव्यवस्था तथा राजनीतिक संस्थाएँ भी हैं। इसलिए मानव पारिस्थितिकी को मानव समुदायों तथा जैविक, भौतिक और सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण के बीच संबंधों और समायोजन का समग्र अध्ययन कहा जा सकता है। इसमें पर्यावरण के प्रति अनुकूलन, संसाधनों का उपयोग, स्वास्थ्य, जीवन-शैली और परिवर्तन की प्रक्रियाएँ सम्मिलित हैं।